International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 1, Issue- 1 | January - February 2024 ISSN: 3048-9490

पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों की वर्तमान भारतीय शिक्षा के संदर्भ में प्रासंगिकता

विनोद कुमार पाण्डेय [1], डॉ. कमला दीक्षित [2], डॉ महेंद्र कुमार उपाध्याय [3]

[1] शोधार्थी, ऍफ़. एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद (यूपी)

[2] शोध निर्देशक, ऍफ़. एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद (यूपी)

[3] शोध सह-निर्देशक, प्राचार्य, कौटिल्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा

सारांश

किसी भी राष्ट्र एवं समाज की प्रगति एवं विकास शिक्षा पर निर्भर करता है। वर्तमान में शिक्षा कैसी है तथा वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा कैसी होनी चाहिए इन सन्दर्भों में महापुरुष, विद्वान, समाज सुधारक एवं राजनीतिज्ञ अपनी संस्कृति के अनुरूप शिक्षा संरचना का मार्गदर्शन करते हैं। प्राचीन काल से ही गुरु - वाल्मीकि, व्यास, चाणक्य तथा आधुनिक काल में दयानन्द सरस्वती, अरविन्द, टैगोर, मदन मोहन मालवीय, डॉ. अम्बेडकर, डॉ. जाकिर हुसैन आदि के शैक्षिक विचारों ने भारतीय शिक्षा को प्रभावित किया है। इनकी शैक्षिक विचारधाराओं पर शिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई है। इन शैक्षिक चिन्तकों में मालवीय जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

पंडित मदन मोहन मालवीय भारतीय शिक्षा प्रणाली के पुनरुत्थान के प्रस्तोता और एक समाजसुधारक थे। उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ साथ भारतीय संस्कृति और आधुनिक ज्ञान के समन्वय की एक मजबूत आधारशिला रखी। आज नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) को लागू कर दिया गया है, ऐसे में मालवीय जी के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। उन्होंने शिक्षा को राष्ट्रीय पुनर्जागरण का माध्यम माना और इसे भारतीय संस्कृति व मूल्यों के अनुरूप विकसित करने का प्रयास किया। उनके शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों का उद्देश्य नैतिक, आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करना था। यह शोध पत्र उनके शैक्षिक दृष्टिकोण, दार्शनिक विचारों और उनके द्वारा स्थापित काशी हिंदू विश्वविद्यालय की भूमिका का विश्लेषण करता है तथा वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में उसकी उपयोगिता को सिद्ध करता है.

कीवर्ड – मालवीय के शैक्षिक विचार, भारतीय शिक्षा, वर्तमान भारतीय शिक्षा, आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक शिक्षा

प्रस्तावना:

प्रत्येक मनुष्य जन्म के समय पशुपत होता है। वह इन्हीं पाशविक प्रवृत्तियों के साथ व्यापक संसार में प्रवेश करता है और शिक्षा के माध्यम से वह अपना परिमार्जन करता है। फलस्वरूप वह समाज का एक जिम्मेदार एवं प्रेरणादायक व्यक्तित्व बन जाता है। इसीलिए शायद जॉन लॉक ने कहा था- 'पौधों का विकास कृषि द्वारा होता है और मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा। भारतीय शैक्षिक एवं दार्शनिक परंपरा अति प्राचीन एवं समृद्ध रही है यह अनादि काल से अनवरत अपने ज्ञान की गंगा द्वारा संपूर्ण विश्व को सिंचित कर रही है। भारत पर समय-समय पर विदेशी आक्रांताओं ने राज किया, किंतु जैसे रात्री के बाद सुबह जरूर होता है, उसी प्रकार भारतीय पुनर्जागरण काल का प्रादुर्भाव 19वीं शदी में हुआ। भारतीय नवजागरण को अनेक महापुरुषों ने अपने श्रम बिंदुओं से सींचा। राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, केशवचंद्र सेन, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, गोपालकृष्ण गोखले, रवींद्रनाथ टैगोर, अरविंद घोष, डॉ. संपूर्णानंद, मदन मोहन मालवीय एवं अनेक हिंदी साहित्य के कवियों का प्रमुख स्थान है।

शिक्षा का धर्म, राजनीतिक, समाज एवं सत्ता से घनिष्ठ संबंध होता है, अतः शैक्षिक परिस्थितियों को इन नवीन विचार धाराओं ने प्रभावित किया। जिसमें महामना मदन मोहन मालवीय का विशेष योगदान रहा। शिक्षा के क्षेत्र में मालवीय जी ने पराधीन विचारधारा में वह महत्वपूर्ण कार्य किया है, जो विश्व इतिहास में एक अद्भुत एवं अलौकिक घटना है। उनकी मान्यता थी कि राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण से ही भावी पीढ़ी की शिक्षा सर्वोत्तम हो सकती है। मालवीय जी का मानना था कि शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति में राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति की भावना विकसित की जा सकती है। उन्होंने राष्ट्र के युवाओं को आने वाले विश्व के सम्मुख उत्कृष्ट रूप से खड़ा करने के विचार से ही काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की जो उस समय राष्ट्रीय आंदोलन का केंद्र भी हुआ करता था।

मालवीय जी का जीवन परिचयः-

मदन मोहन मालवीय का जन्म 25 दिसम्बर, 1861 को इलाहाबाद (प्रयागराज) में हुआ था। इनके पिता का नाम पण्डित ब्रजनाथ और माता का नाम श्रीमती भूनादेवी था। मूल रूप से इनके पूर्वज मालवा प्रान्त के निवासी थे, इसीलिए इन्हें मालवीय कहा जाता था। एक धार्मिक परिवार में पले-बढ़े मदन मोहन मालवीय को धार्मिक संस्कार विरासत में मिले थे। अपने पिता और दादा की तरह मालवीय जी भी धार्मिक प्रचार करने के इच्छुक थे, परन्तु परिस्थितियों के दबाव के चलते उन्हें अध्यापन में आना पड़ा, परन्तु धार्मिक संस्कारों ने इनके भावी व्यक्तित्व को प्रभावित अवश्य किया। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और इसके बाद इलाहाबाद में आकर विद्यालय में अध्यापन करना प्रारम्भ कर दिया। अपने व्यवहार और पढ़ाने की विशेष शैली के कारण मालवीय जी अपने विद्यार्थियों के बीच बहुत लोकप्रिय थे। लेकिन असाधारण प्रतिभा के धनी पण्डित मदन मोहन मालवीयजी का कार्यक्षेत्र केवल अध्ययन-अध्यापन और राजनीति तक ही सीमित नहीं था। स्वभाव से शालीन, विनम्र, उदारचित्त और सादा जीवन व्यतीत करने वाले मालवीयजी की पहचान एक सफल शिक्षाविद्, पत्रकार, सम्पादक, समाज-सुधारक, वकील और एक कुशल वक्ता की भी है। 1886 ई. में जब उन्होंने कांग्रेस अधिवेशन में भाषण दिया तो कालाकांकर के राजा रामपाल सिंह उनसे बहुत प्रभावित हुए और उनसे 'हिन्दोस्तान' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र का सम्पादक बनने का अनुरोध किया। मालवीयजी ने सम्पादक बनने का प्रस्ताव स्वीकार कर 'हिन्दोस्तान' को लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचाया। तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं पर उनके द्वारा लिखे गए निर्भीक लेखों और टिप्पणियों को बहुत सराहा जाता था। मालवीयजी ने बाद में 'इण्डियन ओपिनियन' 'लीडर', 'मर्यादा', 'सनातन धर्म, 'हिन्दुस्तान टाइम्स' तथा 'अभ्युदय' का सम्पादन भी किया।

पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारः-

मालवीय जी शिक्षा के बिना व्यक्ति के विकास को असम्भव मानते थे। उनका कहना था- 'शिक्षा के बिना मनुष्य पशुतुल्य होता है। मालवीयजी उच्च शिक्षा के आधुनिकतम विषयों, विज्ञान की विभिन्न शाखाओं और पद्धतियों के साथ ही भारतीय ज्ञान परम्परा-वेद, शास्त्र, दर्शन, साहित्य और कला के अध्ययन के वैश्विक केन्द्र बिन्दु के रूप में काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना किए। आज यहाँ इंजीनियरिंग, अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी, आधुनिक चिकित्सा प्रणाली से लेकर वेद उपनिषद् वैदिक कर्मकाण्ड साहित्य आदि सभी प्राचीन एवं नवीन भारतीय विधाओं की शिक्षा दी जाती है। जहां देश-विदेश के विद्यार्थी प्रवेश प्राप्त करना एक बड़ी उपलब्धि मानते हैं। लगभग 4,060 एकड़ में फैले इस विशाल विश्वविद्यालय की स्थापना एक सरल कार्य नहीं था। सम्भवतः इस कठिनतम कार्य को महामना ही कर सकते थे। इस कार्य के लिए उन्होंने तत्कालीन समय में एक करोड़ रुपये की धनराशि जुटाई और इससे भी बड़ा

आश्चर्य यह है कि उन्होंने यह सारा धन दान और चन्दे के माध्यम से जुटाया था इसके लिया उन्हे 'किंग ऑफ बैगर्स' (भिखारियों का राजा) भी कहा गया।

मालवीय जी व्यावहारिक एवं जीविकोपार्जन तथा आधुनिकता से परिपूर्ण शिक्षा व्यवस्था के पक्षधर थे। वे भारत के राष्ट्र निर्माता में एक थे, जिन्होंने अपने कर्म से भारतीय जनमानस के हृदय में अपना स्थान बनाया। इसी कारण पंडित मदन मोहन मालवीय को 'महर्षि की उपाधि से विभूषित किया गया। पंडित महामना मदन मोहन मालवीय के विषय में डॉ. हरिशंकर शर्मा लिखते हैं- 'मालवीय जी भारत की दिव्य विभूतियों में से एक थे जिनकी धवल कीर्ति कौमुदी महोत्सव के समान पूर्ण प्रकाश सी फैली हुई है।"

महामना शिक्षा को सर्वाधिक प्रभावशाली शक्ति मानते थे। वे भारत के सांस्कृतिक-सामाजिक और राजनीतिक-आर्थिक पराभव का कारण भारतीयों की निरक्षरता एवं अशिक्षा को मानते थे। उनका कहना था कि "यदि देश का अभ्युदय चाहते हो तो सब प्रकार से यत्न करो कि देश में कोई बालक या बालिका निरक्षर न रहे।" उनके अनुसार देश की दुर्दशा को समाप्त करने का एकमात्र साधन साक्षरता एवं शिक्षा ही है। अतः उन्होंने अपने जीवन के अधिक महत्वपूर्ण भाग को शिक्षा में लगाया। महामना शिक्षा को मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का साधन मानते थे। उनकी दृष्टि में शिक्षा वह है जो विद्याश्री की शारीरिक, बौद्धिक तथा भावात्मक शक्तियों को परिपुष्ट और विकसित कर सके तथा भविष्य में किसी व्यवसाय द्वारा ईमानदारी से जीवन-निर्वाह करने के योग्य बना सके। पंडित मदन मोहन मालवीय कहते थे "सब स्तर पर शिक्षा का ऐसा प्रबन्ध हो कि कोई बच्चा निर्धन होने के कारण उससे वंचित न रह पाये। शिक्षा के व्यापक विस्तार से सामाजिक कुरीतियों और आर्थिक विषमताओं को दूर किया जा सकता है। महामना स्त्रियों की शिक्षा के घोर समर्थक थे। उनकी इच्छा थी कि राष्ट्रीय कार्यक्रम के आधार पर स्त्रियों को इस तरह शिक्षित किया जाये कि उनमें प्राचीन तथा आधुनिक संस्कृतियों के बेहतर पक्षों का समन्वय हो। वे नारियों को इतना सबल बनाना चाहते थे कि वे भारत के पुनर्निमाण में वे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

वर्तमान भारतीय शिक्षा में मालवीय जी के विचारों की प्रासंगिकताः

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रभावः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूल्यों पर आधारित शिक्षा, सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, और अनुसंधान को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया है, जो मालवीय जी के विचारों के अनुरूप है।

2. चरित्र निर्माण पर बलः आज के समय में, जब नैतिक मूल्यों की गिरावट देखी जा रही है, मालवीय जी के चरित्र निर्माण पर दिए गए जोर की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। शिक्षा के माध्यम से नैतिक मूल्यों का संचार करना आवश्यक है, ताकि उत्तम नागरिक तैयार हो सकें।

3. सामाजिक समानता और समावेशी शिक्षाः भारत जैसे विविधता से भरे देश में, सभी को शिक्षा का समान अवसर देना अत्यंत आवश्यक है। मालवीय जी का यह विचार आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उनके समय में था।

4. शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकताः वर्तमान में, शिक्षक प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, ताकि शिक्षक न सिर्फ विषय ज्ञान में निपुण हों, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में भी योगदान दे सकें। यह दृष्टिकोण मालवीय जी के विचारों से प्रेरित है।

5. आत्मनिर्भरता की भावनाः मालवीय जी शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक विद्यार्थी को उसके भविष्य के जीवन को ध्यान में रखकर आत्मनिर्भर बनाने के प्रति काफी सचेत थे. आज भी आत्मनिर्भर भारत कार्यक्रम के अंतर्गत हम देखते हैं कि मालवीय जी के उसे विचारधारा का आज भी कितनी आवश्यकता है.

6. अनुसंधान-आधारित शिक्षा: इसके माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में जो भी शिक्षण विधियाँ, पाठ्यक्रम और रणनीतियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं, वे वैज्ञानिक शोध और डेटा पर आधारित होती हैं, जिससे विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को और बेहतर बनाया जा सके. मालवीय जी प्रारंभ से ही शोध आधारित शिक्षा के पक्षधर रहे हैं जो आज के भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है.

पंडित मदन मोहन मालवीय के अनुसार शिक्षा का उद्देश्यः-

पंडित मदन मोहन मालवीय जी की विचारधारा तत्कालीन सामाजिक जरूरत के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य को निश्चित किए हैं। उनके अनुसार शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि नैतिकता, संस्कृति और राष्ट्र निर्माण है
2. धार्मिक सहिष्णुता व सांस्कृतिक मूल्य आधारित शिक्षा
3. स्त्री शिक्षा का समर्थन
4. आधुनिक विज्ञान और तकनीकी शिक्षा को महत्व
5. चारित्रिक विकास
6. विश्व बंधुत्व की भवन के विकास का उद्देश्य
7. प्राचीन शिक्षा व्यवस्था एवं आधुनिक भौतिकवाद में समन्वय
8. उद्योगों के विकास
9. मातृभाषा के प्रयोग / भारतीय भाषाओं में शिक्षा का समर्थन
10. शारीरिक एवं मानसिक विकास

पंडित मदन मोहन मालवीय के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रमः -

पाठ्यक्रम का निर्माण शैक्षिक आदर्शों और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है। पाठ्यक्रम से ही इस तथ्य का निर्धारण होता है कि किस स्तर पर किस चीज की शिक्षा देनी है। पाठ्यक्रम कोई निर्धारित वस्तु नही है जो हर समय, हर स्थान पर एक जैसी रहे। हर समाज और देश अपनी आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम निर्धारित करता है। अर्थात् देश, काल और परिस्थिति के अनुसार पाठ्यक्रम का निर्माण होता है और नई परिस्थितियों में पाठ्यक्रम में संशोधन और परिमार्जन होता रहता है। महामना ने यह महसूस किया कि संकुचित पाठ्यक्रम द्वारा राष्ट्रीय उद्देश्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। अतः उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में अत्यन्त ही लचीले पाठ्यक्रम को अपनाया। महामना ने अपने विश्वविद्यालय में प्राचीन से लेकर अर्वाचीन सभी उपयोगी विषयों को स्थान देने का प्रयास किया। महामना देश के विकास हेतु विज्ञान की शिक्षा आवश्यक मानते थे, अतः उन्होंने आधुनिक विज्ञान की शिक्षा पर जोर दिया। व्यक्ति आत्मनिर्भर बने अतः बुनाई, रंगाई, धुलाई, धातुकर्म, काष्ठ-कला, मीनाकारी आदि की शिक्षा पर मालवीय ने बल दिया। भारत एक कृषि प्रधान देश है अतः महामना ने इस ओर विशेष ध्यान देते हुए कृषि के आधुनिकतम उपकरणों के प्रयोग की शिक्षा की उच्चतम व्यवस्था की। वे चाहते थे कि माध्यमिक स्तर पर कृषि सम्बन्धी शिक्षा दी जाये तथा उच्च स्तर पर भी इस विषय में अनुसन्धान किये जाये।

इसके साथ-साथ महामना ने चिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद, नक्षत्र विज्ञान, भाषा आदि सभी की शिक्षा पर जोर दिया। विभिन्न विषयों पर प्राच्य और पाश्चात्य ज्ञान का तुलनात्मक और समन्वयात्मक अध्ययन, प्राचीन भारतीय संस्कृति, दर्शनशास्त्र, साहित्य, संगीत, काव्य, नाट्यकला, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला और इतिहास के गम्भीर अध्ययन-अध्यापन, वेद वेदांग तथा संस्कृत साहित्य की शिक्षा के अतिरिक्त आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, धातु विज्ञान, खनन कार्य, इंजीनियरिंग तथा कृषि विज्ञान का अध्ययन इसकी विशेषता थी।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय की संकल्पना / स्थापना :

विश्वविद्यालय की उनकी कल्पना विराट थी। वे चाहते थे कि विश्व में जितना ज्ञान सम्भव हो उसका अन्वेषण, सृजन, परिवर्द्धन और वितरण विश्वविद्यालय से हो और इस ज्ञान के द्वारा भारतीय चरित्र और बुद्धि का विकास हो। भारतीय नवयुवकों को केवल जीविका के लोभ और राष्ट्रीय दृष्टि से नैतिक पतन से बचाने के लिये स्वतन्त्र रूप से राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन के सन्दर्भ में महामना की कल्पना में एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की उद्भावना हुई। यही राष्ट्रीय विश्वविद्यालय (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) के रूप में स्थापित हुआ। अपने उद्देश्यों को साकार रूप प्रदान करने के लिये मालवीय जी ने काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। 4 फरवरी 1916 को 12 बजे वायसराय लार्ड हार्डिंग ने वसंत पंचमी के दिन इस विश्वविद्यालय का शिलान्यास किया। नींव में एक ताम्र पत्र रखा जिसमें 20 श्लोक लिखे हुये हैं

विश्वविद्यालय संविधान के अन्तर्गत महामना जी तीसरे कुलपति चुने गए। हिन्दू विश्वविद्यालय के वाइस चान्सलर 'कुलपति' कहलाते थे। वास्तव में मालवीय जी केवल कुलपति ही नहीं कुलगुरू भी थे, केवल व्यवस्थापक ही नहीं, एक श्रेष्ठ द्रष्टा भी थे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मालवीय जी 20 वर्षों तक (1919-1939) कुलपति रहे। इस विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक और भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1939-1948) ने भी सुशोभित किया।

मालवीय जी के शैक्षिक और दार्शनिक विचारों का मूर्त रूप काशी हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य भारतीय मूल्यों और आधुनिक शिक्षा प्रणाली का समन्वय करना था। महामना ने अपने विश्वविद्यालय में प्राचीन से लेकर अर्वाचीन सभी उपयोगी विषयों को स्थान देने का प्रयास किया। महामना देश के विकास हेतु विज्ञान की शिक्षा आवश्यक मानते थे, अतः उन्होंने आधुनिक विज्ञान की शिक्षा पर जोर दिया। व्यक्ति आत्मनिर्भर बने अतः बुनाई, रंगाई, धुलाई, धातुकर्म, काष्ठ-कला, मीनाकारी आदि की शिक्षा पर मालवीय ने बल दिया। भारत एक कृषि प्रधान देश है अतः महामना ने इस ओर विशेष ध्यान देते हुए कृषि के आधुनिकतम उपकरणों के प्रयोग की शिक्षा की उच्चतम व्यवस्था की। वे चाहते थे कि माध्यमिक स्तर पर कृषि सम्बन्धी शिक्षा दी जाये तथा उच्च स्तर पर भी इस विषय में अनुसन्धान किये जाये। इसके साथ-साथ महामना ने चिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद, नक्षत्र विज्ञान, भाषा आदि सभी की शिक्षा पर जोर दिया। विभिन्न विषयों पर प्राच्य और पाश्चात्य ज्ञान का तुलनात्मक और समन्वयात्मक अध्ययन, प्राचीन भारतीय संस्कृति, दर्शनशास्त्र, साहित्य, संगीत, काव्य, नाट्यकला, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला और इतिहास के गम्भीर अध्ययन-अध्यापन, वेद वेदांग तथा संस्कृत साहित्य की शिक्षा के अतिरिक्त आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, धातु विज्ञान, खनन कार्य, इंजीनियरिंग तथा कृषि विज्ञान का अध्ययन इसकी विशेषता थी।

विश्वविद्यालय से सम्बंधित विभिन्न संस्थायें :

1. संस्कृत महाविद्यालय : इसमें वेद, धर्मशास्त्र, पूर्वमीमांसा वेदान्त, सांख्य योग, न्याय, वैशेषिक, साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष, पुराण तथा इतिहास, बौद्ध, जैन दर्शन आदि की शिक्षा दी जाती हैन विद्यालय में शोध कार्य की भी व्यवस्था है।

2 केन्द्रीय हिन्दू विश्वविद्यालय : इस समय विश्वविद्यालय के अन्तर्गत बारह विभाग है-अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, दर्शन, मनोविज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, उर्दू, अरवी तथा फारसी. वाणिज्य, भारतीय तथा विदेशी भाषायें।

3. विज्ञान महाविद्यालय : इसके अन्तर्गत निम्न विभाग है- भौतिक, रसायन, वनस्पतिशास्त्र, जीव-विज्ञान, भू-गर्भशास्त्र, भूगोल, भू-भौतिकी आदि।

4. प्राच्य भारतीय महाविद्यालय : इसके अन्तर्गत प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, संस्कृति तथा पाली विभाग, कला एवं स्थापत्य विभाग, भारतीय दर्शन एवं धर्म विभाग है।

विश्वविद्यालय में जो अन्य संस्थायें क्रियाशील हैं, वे निम्न प्रकार हैं-

1. भारत कला भवन
2. पुस्तकालय
3. नगर समिति
4. पुस्तकागार
5. केन्द्रीय कार्यालय
6. व्यायाम संघ
7. विद्यार्थी गृह
8. देवालय
9. अतिथि गृह
10. गीता समिति
11. मुद्रणालय

इसके अन्तर्गत विधि महाविद्यालय, चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, महिला महाविद्यालय, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय अभियांचिकी महाविद्यालय तथा कृषि महाविद्यालय आदि है। विश्वविद्यालय में चौदह संकाय और 144 विभाग है। नेपाल स्टडीज का एक केन्द्र है। विश्व विद्यालय में एक विशाल पुस्तकालय है जिसमें लगभग 18 लाख से अधिक पुस्तके हैं, विश्वविद्यालय में इस समय लगभग 30 हजार से अधिक छात्र हैं, 800 से अधिक विदेशी छात्र हैं, लगभग दो हजार शिक्षक हैं और लगभग 8 हजार से अधिक शिक्षणेत्तर कर्मचारी हैं। लगभग आठ (8) हजार छात्रों के लिये छात्रावास की व्यवस्था है लगभग 10 मील क्षेत्रफल में विश्वविद्यालय का विशाल परिसर है जिनकी चहारदीवारी महाराज बलरामपुर ने बनवाई थी। छात्रावास, शिक्षा भवन, अध्यापक निवास आदि बहुत ही सुनियोजित ढंग से बनाये गये हैं। विश्वविद्यालय के भवनों के निर्माण का स्वरूप अर्धवृत्ताकार है। इस विश्वविद्यालय का वर्तमान स्वरूप शनैः शनै बदल रहा है। मालवीय जी के आदशों को इस विश्वविद्यालय के साकार रूप देने का यथा सम्भव प्रयत्न अभी भी होना चाहिये।

उपसंहारः-

पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचार आज भी भारतीय शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनके द्वारा प्रस्तावित मूल्यों पर आधारित शिक्षा, पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान का समन्वय, सामाजिक समानता, और शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका जैसे सिद्धांत वर्तमान में भी उपयोगी हैं। वर्तमान समय मे मालवीय जी के शैक्षिक विचार की प्रासंगिकता को प्रस्तुत लेख में वर्णित करने का प्रयास किया गया हैं। मालवीय जी विनम्रता, शुचिता, राष्ट्र-प्रेम, एवं संस्कृति की भावना से भरे थे। वे कहते थे- 'हम धर्म को चरित्र का पक्का आधार और मानव सुख का सच्चा स्रोत हैं, हम मानते हैं कि देशभक्ति एक शक्तिशाली उत्थान प्रभाव है, जो पुरुषों को उच्च विचार वाले निःस्वार्थ कार्रवाई के लिए प्रेरित करती है।"

पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक और दार्शनिक विचार आज भी प्रासंगिक हैं। उनका दृष्टिकोण भारतीय शिक्षा प्रणाली को आत्मनिर्भर, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाने पर केंद्रित था। उनके प्रयासों का प्रभाव आज भी भारतीय शिक्षा प्रणाली में देखा जा सकता है।

संदर्भ सूचीः-

1. चतुर्वेदी, सीता राम, महामना पं. मदनमोहन मालवीय, तारा प्रकाशन, वाराणसी-1936.
2. ए.एस. अल्तेकर, महामना पं. मदनमोहन मालवीय, तारा प्रकाशन, वाराणसी-1936
3. डॉ. दूबे, रमाकान्त, विश्व के कुछ महान शिक्षा शास्त्री (मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली)
4. प्रसाद, वेधनाथ, विश्व के महान शिक्षा शास्त्री
5. डॉ. अंकुर गुप्ता, मालवीय जी के शैक्षिक विचार
6. लाल, मुकुट बिहारी, महामना मालवीय जीवन और नेतृत्व, तारा प्रकाशन वाराणसी 1978.
7. मिश्र, आत्मानन्द, मदनमोहन मालवीय जीवन और नेतृत्व, तारा प्रकाशन वाराणसी 1978.
8. एम.बी. बुच, फोर्थ एण्ड फिफ्त सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन (एनसीआरटी).
9. पदमकान्त मालवीय, मालवीय जी के लेख-वाराणसी प्रकाशन.
10. राम शकल पाण्डेय, मालवीय जी के लेख-वाराणसी प्रकाशन.
11. महामना मालवीय की शैक्षिक दृष्टि सिंह सुनील कुमार, गौरव सिंह
1. राष्ट्र निर्माण में मालवीय जी की शैक्षिक भूमिका – प्रो. शरद चंद्र मिश्रा
2. काशी हिंदू विश्वविद्यालय और मालवीय जी का स्वप्न – श्रीकांत उपाध्याय
3. महामना मालवीय का शिक्षा में योगदान – डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा
4. प्रो. बी.एल. जैन ऊषा शर्मा
5. त्रिभुवन मिश्रा. - पं. मदन मोहन मालवीय का शैक्षिक चिंतन एवं उसकी उपादेयता- शोधार्थी शिक्षा संकाय काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी
6. अल्तेकर, अनंत सदाशिव. 2014. प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, अनुराग प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, वाराणसी.
7. तिवारी, उमेश दत्त. 2016. महामना की आत्मकथा (व्यक्तिगत जीवन प्रसंग). महामना मालवीय फाउंडेशन, वाराणसी.
8. पाण्डेय, रामशकल. 2012. विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
9. पाण्डेय, विश्वनाथ 2006. काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक मदन मोहन मालवीय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी.
10. मालवीय, गिरिधर. 2012. महामना पं. मदन मोहन मालवीय जीवन परिचय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय से प्रकाशित, वाराणसी.